आदर्श प्रश्नपत्र 2024

कक्षा-10 हिन्दी

(केवल प्रश्न-पत्र)

समय: तीन घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 70**

निर्देश-

(1) प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित है।

(II) प्रश्नपत्र दो खण्ड (अ) तथा खण्ड (ब) में विभाजित है।

(III) प्रश्नपत्र के खण्ड (अ) में बहुविकल्पीय प्रश्न हैं जिसमें सही विकल्प का चयन करके O.M.R. शीट पर नीले अथवा काले बाल प्वाइंट पेन से सही विकल्प वाले गोले को पूर्ण रूप से काला करें।

(IV)खण्ड (अ) में बहुविकल्पीय प्रश्न हेतु प्रत्येक प्रश्न के लिए (01) अंक निर्धारित है।

(V) ओ०एम०आर० शीट पर उत्तर अंकित किये जाने के पश्चात उसे काटे नहीं तथा इरेजर (Eraser) एवं व्हाइटनर (Whitener) आदि का प्रयोग न करें। (VI)प्रत्येक प्रश्न के सम्मुख उनके निर्धारित अंक दिये गये हैं।

खंड – क (बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. मैला आँचल' किसकी कृति है-

A. श्रीनिवासदास
B. फणीश्वरनाथ 'रेणु'
C. राहुल सांकृत्यायन
D. इलाचन्द्र जोशी

व्याख्यात्मक हल –

बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, चारू चंद्रलोक लेख, पुनर्नवा- विधा – उपन्यास, लेखक – हजारीप्रसाद द्विवेदी

2. हिन्दी का प्रथम उपन्यास है-

i. गोदान
ii. मैला आँचल
iii. परीक्षा गुरु
iv. गबन

व्याख्यात्मक हल –

प्रथम कहानी – इंदुमती (किशोरीलाल गोस्वामी)
प्रथम नाटक- नहुष (गोपालचंद्र गिरिधर दास)
प्रथम यात्रावृत्त – सरयूपार की यात्रा (भारतेंदु हरिश्चंद)
प्रथम रिपोर्ताज – लक्ष्मीपुरा (शिवदानसिंह चौहान)
मेरी कॉलेज डायरी- धीरेन्द्र वर्मा

3. जड़ की बात' रचना है-

A. जैनेन्द्र कुमार
B. इलाचन्द्र जोशी
C. फणीश्वरनाथ 'रेणु'
D. केशवदत्त चिन्तामणि

व्याख्यात्मक हल –
जड़ की बात, प्रस्तुत प्रश्न, भाग्य और पुरुषार्थ अदि के लेखक जैनेन्द्र कुमार हैं।

4. शुक्लोत्तर युग की समय-सीमा क्या है?

A.1903 ई0 से 1920 ई0 तक
B.1920 ई0 से 1936 ई0 तक
C.1936 ई0 से 1950 ई0 तक
D.1950 ई0 से अब तक

व्याख्यात्मक हल –

शुक्ल युग- 1920 ई0 से 1936 ई0 तक
शुक्लोत्तर युग- 1936 ई0 से 1950 ई0 तक
स्वातंत्र्योत्तर युग- 1950 ई0 से अब तक

5. 'आँसू' के रचनाकार हैं-

A.अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
B.मैथिलीशरण गुप्त
C.महादेवी वर्मा
D.जयशंकर प्रसाद

व्याख्यात्मक हल –
आंसू, लहर, कामायनी, प्रेमपथिक, झरना, कानन-कुसुम आदि जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ है।

6. 'द्वापर' के रचनाकार हैं-

A. महादेवी वर्मा
B. मैथिलीशरण गप्त
C. सुमित्रानन्दन पन्त
D. अज्ञेय

व्याख्यात्मक हल–
अनघ, यशोधरा, द्वापर, साकेत, भारत भारती, जयद्रथवध आदि रचनाएँ मैथिलीशरण गुप्त जी की हैं।

7. छायावाद की मुख्य विशेषतायें हैं-

A.प्रकृति का मावनीकरण
B.युद्धों का वर्णन
C.यथार्थ चित्रण
D.भक्ति की प्रधानता

व्याख्यात्मक हल –

8. सुमित्रानन्दन पन्त की रचना नहीं हैं-

A.युगधारा
B.युगान्त
C.लोकायतन
D.वीणा

व्याख्यात्मक हल –
वीणा, ग्रंथि, पल्लव, पल्लविनी, युगांत, युगवाणी, चिदंबरा, लोकायतन, कला और बूढा चाँद आदि रचनाएँ पन्त की हैं।
युगधारा नागार्जुन की है।

9. जयशंकर प्रसाद किस युग के कवि हैं?

A. शुक्लोत्तर युग
B. छायावादी युग
C. द्विवेदी युग
D. प्रगतिवादी युग

व्याख्यात्मक हल –

- प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, रामकुमार वर्मा आदि छायावादी कवि हैं।

10. गीत फरोश रचना किसकी है?

A. गुलाबराय
B. भवानीप्रसाद मिश्र
C. केदारनाथ सिंह
D. केदारनाथ अग्रवाल

व्याख्यात्मक हल –

- सांध्यगीत, नीहार, यामा, नीरजा – महादेवी वर्मा की रचनाएँ हैं।
- गीत फरोश – भावनी प्रसाद मिश्र।

11. शोक विकल सब रोवहिं रानी, रूप राशि बल तेज बखानी।। में कौन-सा रस है-1

A. करुण रस
B.शृंगार रस
C.शान्त रस
D.वीर रस

व्याख्यात्मक हल –
करुण रस है।

- हास्य का स्थायी भाव – हास
- करुण का स्थायी भाव – शोक

12. सोरठा छंद में कितने चरण होते हैं-

A. दो
B. तीन
C. पांच
D. चार

व्याख्यात्मक हल –
दोहा एवं सोरठा दोनों में चार- चरण होते हैं।
दोहा छंद अर्द्धसममात्रिक छंद होता है। यह छंद सोरठा छंद के विपरीत होता है। इसमें प्रथम चरण तथा तृतीय चरण में 13-13 और द्वितीय चरण तथा चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती है।
सोरठा छंद अर्धसममात्रिक छंद हैं, सोरठा छंद के प्रथम और तृतीय चरणों में 11-11 मात्राएं होती हैं और दूसरे और चौथे चरणों में 13-13 मत्राएं होती।

13. पेपर पात सरिस मन डोला। पंक्ति में अलंकार होगा-

A. उपमा
B. रूपक
C. उत्प्रेक्षा
D. श्लेष

व्याख्यात्मक हल –

उपमा अलंकार :-

जब किसी वस्तु का वर्णन करने के लिए उससे अधिक प्रसिद्ध वस्तु से गुण, धर्म आदि के आधार पर उसके समानता की जाती है, तब **उपमा अलंकार** होता है। उ.- आहुति सी गिर चढी चिता पर....

रूपक अलंकार :-

जब उपमेय और उपमान में भेद होते हुए भी दोनों में समानता की जाए और उपमेय को उपमान के रूप में दिखाया जाए, तो **रूपक अलंकार** होता है।

उ.- चरण कमल बंदौ हरि राई.....उदित उदयगिरि मंच पर.....

उत्प्रेक्षा अलंकार :-

जब उपमान से भिन्नता जानते हुए भी उपमेय में उपनाम की संभावना की जाए, वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें प्रायः मनु, मानो, मनौ, जनु, जानो, निश्चय जैसे शब्द का प्रयोग किया जाता है। उ.- मनो नीलमणि शैल पर.....

14. कर्पट' का तद्भव रुप्प बनेगा-

A. कपट
B. कपड़ा
C. कपाट
D. किवाड़

व्याख्यात्मक हल –

- हरिद्रा का – हल्दी
- कर्पट – कपड़ा
- चणक – चना
- गर्गर- गागर
- घट – घड़ा
- गोधूम- गेहूँ
- यव- जाऊ
- जीर्ण – जीरा

15. निम्न में से पृथ्वी का पर्यायवाची शब्द कौन सा नहीं है-

A. धारिणी
B. वसुंधरा
C. धरा
D. धरित्री

व्याख्यात्मक हल –
धरा, धरती, वसुंधरा, धरित्री, पृथ्वी, भूमि, तल, जमीन, वसुधा, अवनि आदि धरती के पर्यायवाची है।
लेकिन धारिणी नहीं।

16. परि उपसर्ग निम्न में से किस शब्द में नहीं है -

A. परिचर्या
B. परिवर्तन
C. परिणय
D. परिंदा

व्याख्यात्मक हल:-

- प्र- प्रख्यात, प्रस्थान, प्रदूषण
- उप- उपवास, उपमंत्री, उपवन
- सु- सुव्यवस्था, सुनैना, सुदृढ़
- निर्- निर्जन, निर्धन

परिंदा में परि उपसर्ग नहीं हैं।

17. महेश से सोया नही जाता। में कौन सा वाच्य होगा?

A. कर्मवाच्य
B. कर्तृवाच्य
C. भाववाच्य
D. इनमे से कोई नही ।

व्याख्यात्मक हल –
उत्तर- भाववाच्य।
वाच्य तीन प्रकार के होते हैं।
क्रिया का सम्बन्ध कर्म से होने पर कर्मवाच्य होता है।

18. 'तव' शब्द रूप है, युष्मद् का -

A. पंचमी विभक्ति एक वचन
B. द्वितीया विभक्ति बहुवचन
C. प्रथमा विभक्ति एक वचन
D. षष्ठी विभक्ति एकवचन

युष्मद् (तुम)			
विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

व्याख्यात्मक हल –

उत्तर- D

19. विकारी शब्द कितने प्रकार के होते हैं?

A. दो
B. तीन
C. चार
D. पांच

व्याख्यात्मक हल –
उत्तर-चार

1. संज्ञा
2. सर्वनाम
3. विशेषण
4. क्रिया

20. यदि तुम पढोगे तो ही अच्छे अंक पाओगे। कैसा वाक्य है ?

A. मिश्र वाक्य
B. संयुक्त वाक्य
C. सरल वाक्य
D. नकारात्मक वाक्य

व्याख्यात्मक हल –
उत्तर-मिश्र वाक्य
रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं -

1. सरल वाक्य
2. मिश्र वाक्य
3. संयुक्त वाक्य

खंड – ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

1. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिये – 2+2+2=6

काशी के उत्तर में धर्मचक्र विहार मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खण्डहर था। भग्न चूड़ा, तृण-गुल्मों से ढके हुए प्राचीर, ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी। जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे, उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी "अनन्याश्चिन्तयन्तों मां ये जनाः पर्युपासते।" [801 (DD) 2023]

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए ।

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड' के **'ममता'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **जयशंकर प्रसाद** हैं।

प्रश्न- (ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- **रेखांकित अंश की व्याख्या** – जयशंकर प्रसाद जी कहते हैं कि काशी के उत्तर में अनेक बौद्ध स्मारक हैं। इन स्मारकों को मौर्य वंश एवं गुप्त वंश की शान बढ़ाने के लिए बनवाया गया था। ये स्मारक अब टूट-फूट चुके हैं। इनकी टूटी-फूटी चोटियाँ, दीवारें, कंगूरे खण्डहर बन गए हैं। इन पर झाड़ियाँ उग आई हैं, पत्ते बिखरे हैं। इन खण्डहरों को देखकर ऐसा लगता है मानो ईंट के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्पकला की आत्मा ग्रीष्म ऋतु की चाँदनी से स्वयं को शीतलता प्रदान कर रही थी।

प्रश्न- (iii) धर्मचक्र कहाँ स्थित था ?

उत्तर- काशी के उत्तर में।

अन्य प्रश्न- (iv) पंचवर्गीय भिक्षु कौन थे? ये गौतम से क्यों और कहाँ मिले थे?

उत्तर- पंचवर्गीय भिक्षु गौतम बुद्ध के प्रथम पाँच शिष्य थे, ये पाँचों शिष्य गौतम बुद्ध से उपदेश ग्रहण करने के लिए काशी के उत्तर में स्थित उन खण्डहरों में मिले थे, जो सारनाथ नामक स्थान पर स्थित है।

प्रश्न- (v) "अनन्याश्चिन्तयन्तों मां ये जनाः पर्युपासते।" का भाव स्पष्ट कीजिये।

उत्तर- भावार्थ - जो भक्त मेरा अनन्य भाव से चिन्तन करते हुए मेरी ही उपासना करते हैं, उन नित्ययुक्त पुरुषों का योगक्षेम मैं वहन करता हूँ।

अथवा

यह एक नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है, जो अनन्तकाल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण देश में बहता रहा है और कभी-कभी मूर्त रूप होकर हमारे सामने आता रहा है। यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हमने ऐसे ही मूर्त रूप को अपने बीच चलते-फिरते, हँसते-रोते भी देखा है और जिसने अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नए प्राण फूँके और मुरझाए हुए दिलों को फिर खिला दिया। वह अमरत्व सत्य और अहिंसा का है, जो केवल इसी देश के लिए नहीं, आज मानवमात्र के जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

प्रश्न: (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- **सन्दर्भ-** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के **'भारतीय संस्कृति'** नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक **डॉ० राजेन्द्रप्रसाद** हैं।

रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंशों की व्याख्या - डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कहते हैं कि भारत की राष्ट्रीय एकता की प्राण शक्ति इसकी नीति और इसके अध्यात्म में निहित है। वास्तविकता यह है कि भारतीय संस्कृति में पवित्र चरित्र तथा आत्मा सम्बन्धी चिन्तन का झरना सदा से ही अबाध गति से बहता रहा है। यह झरना कभी स्पष्ट दिखता हुआ और कभी परोक्ष रूप में बहता रहा है। हमारे सामने समय-समय पर उच्च चरित्रवाले तथा धार्मिक एवं आत्मिक चेतना से सम्पन्न महापुरुष आते रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य ही कहा जाएगा कि आधुनिक युग में इस चरित्र और अध्यात्म की सजीव एवं साकार मूर्ति, महात्मा गांधी के रूप में हमारा नेतृत्व कर रही थी। नैतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के इस मूर्त रूप को अर्थात् महात्मा गांधी को प्रत्यक्ष रूप से हमने चलते-फिरते तथा हँसते-रोते भी देखा है। जिस अमर तत्त्व ने भारत को नवीन जीवन और स्फूर्ति प्रदान की, वह तत्त्व है— सत्य और अहिंसा। यह तत्त्व मिटाने से भी नहीं मिटता।

प्रश्न – (iii)लेखक ने गद्यांश में क्या सन्देश देना चाहा है?

उत्तर- लेखक ने इस गद्यांश में सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त को जीवन में उतारने का सन्देश दिया है।

प्रश्न – (iv)गद्यांश में नैतिक और आध्यात्मिक स्त्रोत क्या है?

उत्तर- - राष्ट्रीय एकता की भावना नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है।

प्रश्न – (v)किस मूर्त रूप के चलते-फिरते रहने की बात यहाँ कही गई है?

उत्तर- गांधीजी के रूप में राष्ट्रीय एकता के मूर्त रूप में चलते-फिरते रहने की बात यहाँ कही गई है।

प्रश्न – (vi)महात्मा गांधी ने कौन-सा अमरत्व हमारी सूखी हड्डियों में डाला?

उत्तर- महात्मा गांधी ने हमें सत्य और अहिंसा के अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नए प्राण फूंके।

प्रश्न – (vii)मानवमात्र के जीवन के लिए क्या आवश्यक हो गया है?

उत्तर- मानवमात्र के जीवन के लिए सत्य और अहिंसा आवश्यक हो गए हैं।

प्रश्न – (viii) लेखक ने अमरत्व का स्रोत किसे बताया है?

उत्तर- लेखक ने अमरत्व का स्रोत सत्य और अहिंसा को बताया है।

2. निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिये – 2+2+2=6

ऊधौ मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं।
वृन्दावन गोकुल बन उपवन, सघन कुंज की छाँही
प्रात समय माता जसुमति अरू नंद देखि सुख पावत
माखन रोटी दह्यो सजायौ, अति हित साथ खवावत।।
गोपी ग्वाल बाल सँग खेलत, सब दिन हँसत सिरात
सूरदास धनि-धनि ब्रजवासी, जिनसौ हित जदु-तात।।

काव्यगत सौंदर्य- रस- वियोग श्रृंगार, **छन्द-** गेय पद, **अलंकार-** अनुप्रास, **भाषा-** ब्रज, **गुण-** प्रसाद।

(i) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- **सन्दर्भ-** प्रस्तुत पद्यांश महाकवि '**सूरदास**' द्वारा रचित '**सूरसागर**' से लिया गया है, जो हमारी पाठ्य-पुस्तक के '**काव्य-खण्ड**' में '**पद**' नामक शीर्षक से संकलित है।

(ii) **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-व्याख्या- प्रस्तुत पद में सूरदास जी कह रहे हैं कि श्रीकृष्ण ने उद्धव से ब्रजवासियों की दीन दशा सुनी और उन्हीं के ध्यान में खो गये। वे उद्धव से कहते हैं कि मैं ब्रज को भूल नहीं पाता हूँ। वृन्दावन और गोकुल के वन-उपवन सभी मुझे याद आते रहते हैं। वहाँ के घने कुंजो की छाया को भी मैं भूल नहीं पाता। हे उद्धव! नन्द बाबा और यशोदा मैय्या को देखकर मुझे जो सुख मिलता था, वह मुझे रह-रहकर याद आता है। वे मुझे मक्खन, रोटी और भली प्रकार से जमाया हुआ दही अत्यधिक प्रेम से खिलाती थी अर्थात् माता यशोदा मुझसे बहुत प्यार करती थीं। ब्रज की गोपियों और ग्वाल-बालों के साथ खेलते हुए मेरे सभी दिन हँसते हुए बीता करते थे। ये सभी बातें मुझे बहुत याद आती हैं। अर्थात् बचपन में ब्रज में बीते पलों को भूल नहीं पा रहे हैं। सूरदास जी ब्रजवासियों को धन्य मानते हैं। और उनके भाग्य की सराहना करते हैं, क्योंकि श्रीकृष्ण को उनके हितों की चिन्ता है और श्रीकृष्ण इन ब्रजवासियों को प्रतिक्षण ध्यान करते हैं।

(iii) किसे ब्रज भुलाए नहीं भूलता?

उत्तर- श्रीकृष्ण को ब्रज भुलाए नहीं भूलता।

Other Questions

(iv) यशोदा माता और नंद बाबा को कौन देखकर सुख प्राप्त करते थे?

उत्तर-श्रीकृष्ण जी देखकर सुख प्राप्त करते थे।

(v) माखन, रोटी, दही, मट्ठा इत्यादि प्रेम के साथ श्री कृष्ण को कौन खिलाता था?

उत्तर-माता यशोदा तथा नंदबाबा।

(vi) श्री कृष्ण का दिन किस प्रकार समाप्त होता था?

उत्तर-गोपी, ग्वाल-बालों के साथ खेलते हुए श्री कृष्ण का दिन समाप्त होता था।

अथवा

रूपसि तेरा घन-केश-पाश!
श्यामल श्यामल कोमल कोमल,
लहराता सुरभित केश-पाश!
नभ गंगा की रजतधार में,
धो आई क्या इन्हें रात?
कम्पित हैं तेरे सजल अंग,
सिहरा सा तन हे सद्यस्नात!
भीगी अलकों के छोरों से
चूतीं बूँदें कर विविध लास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

काव्यगत सौंदर्य- रस- श्रृंगार, छन्द- मुक्त, अलंकार- मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश, भाषा- साहित्यिक खड़ी बोली, गुण- माधुर्य।

(i) प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश कवयित्री **महादेवी वर्मा** द्वारा रचित **'नीरजा'** काव्य संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक के काव्य-खण्ड में संकलित **'वर्षा सुन्दरी के प्रति'** शीर्षक से उद्धृत है।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- व्याख्या- महादेवी जी कहती हैं कि हे वर्षारूपी सुन्दरी! तेराकेश-जल बादलों के समान श्यामल-श्यामल है। तेरा श्याम और कोमल केश-जाल सुगन्ध से युक्त होकर लहरा रहा है। हे सुन्दरी! क्या तू इन केशों को रात्रि के समय रजत-धार से युक्त आकाशगंगा में धोकर आई है? तेरे भीगे हुए अंग काँप रहे हैं। तेरा शरीर उस महिला के शरीर के समान सिहर रहा है जो अभी-अभी स्नान करके आई हो। तेरी भीगी हुई अलकों के छोरों से जल की बूँदें प्रसन्नता के साथ नृत्य करती हुई टपक रही हैं। हे वर्षारूपी सुन्दरी! तेरा बादलरूपी बालों का समूह बड़ा आकर्षक लग रहा है।

(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर - मानवीकरण, रूपक।

(iv) यहाँ पर वर्षा को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है?

उत्तर-यहाँ पर वर्षा को 'सुन्दरी' के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

3. निम्नलिखित संस्कृत गद्यांश का ससंदर्भ हिन्दी अनुवाद कीजिये – 2+3 =5

एकदा बहवः जनाः धूमयानम् आरुह्य नगरं प्रति गच्छन्ति स्म। तेषु केचित् । ग्रामीणाः केचिच्च नागरिका: आसन्। मौनं स्थितेषु एकः नागरिकः ग्रामीणीन् उपहसन् अकथयत्'ग्रामीणाः अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिताः अज्ञाश्च सन्ति। न तेषां विकासः अभवत् न च भवितुं शक्नोति।"तस्य तादृशं जल्पनं श्रुत्वा कोऽपि चतुरः ग्रामीणः अब्रवीत् 'भद्र नागरिक ! भवान् एवं किञ्चित् ब्रवीतु, यतो हि भवान् शिक्षितः बहुज्ञश्च अस्ति।

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'संस्कृत-खण्ड' के 'प्रबुद्धो ग्रामीणः' पाठ से उधृत है।

अनुवाद–एक बार बहुत-से लोग रेलगाड़ी पर चढ़कर नगर की ओर जा रहे थे। उनमें कुछ ग्रामवासी थे और कुछ नगरवासी। उनके चुपचाप बैठे रहने पर एक नगरवासी ने ग्रामवासियों की हँसी उड़ाते हुए कहा- "ग्रामवासी पहले की भाँति आज भी अशिक्षित और मूर्ख हैं। न तो उनका विकास हुआ है और न हो सकता है। उसके इस प्रकार के कथन को सुनकर कोई चतुर ग्रामीण बोला-"हे नगरवासी भाई! आप ही कुछ कहें; क्योंकि आप शिक्षित और बहुत जानकार हैं।

अथवा

श्वेतकेतुर्हारुणेय आस , तह पितोवाच ' श्वेतकेतो ! वस ब्रह्मचर्यं न वै सोम्यास्मत्कुलीनोऽननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति ॥
स ह द्वादशवर्ष उपेत्य चतुर्वि शतिवर्ष : सर्वान् वेदानधीत्य , महामना अनूचानमानी स्तब्ध एयाय।

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के **'संस्कृत खण्ड'** के **'आरुणिश्वेतकेतोः संवादः'** नामक पाठ से अवतरित है ।

अनुवाद – श्वेतकेतु आरुणेय (आरुणि का पुत्र) था , उसको उसके पिता ने कहा , ' श्वेतकेतु ! (जाओ) ब्रह्मचर्य वास करो, क्योंकि हमारे कुल में ऐसा पुरुष नहीं होता कि जो वेद को न पढ़कर ब्रह्मबन्धु - सा बन जाए ।

वह बारह वर्ष की आयु में (आचार्य के) पास जाकर चौबीस वर्ष की आयु में समस्त वेदों को पढ़कर बड़े मनवाला , अपने आपको पूरा विद्वान् समझता हुआ और बड़ा अकड़वाला बनकर वापस लौट आया ।

3. निम्नलिखित संस्कृत पद्यांश का ससंदर्भ हिन्दी अनुवाद कीजिये – 2+3 =5

कोकिल ! यापय दिवसान् तावद् विरसान् करीलविटपेषु ।
यावन्मिलदलिमालः कोऽपि रसालः समुल्लसति।।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'संस्कृत खण्ड' के 'अन्योक्तिविलास:' नामक पाठ से अवतरित है ।

हिन्दी अनुवाद - हे कोयल ! जब तक भौंरों से युक्त कोई आम्रवृक्ष विकसित न हो ,तब तक तुम अपने नीरस दिनों को करील के वृक्षों पर ही बिताओ । (अर्थात् जब तक अच्छे दिन आएँ , व्यक्ति को बुरे दिन किसी प्रकार व्यतीत कर लेने चाहिए)।

अथवा

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती तत्र सन्ततिः ।।

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य - पुस्तक '**संस्कृत परिचायिका**' के '**वाराणसी**' नामक पाठ से लिया गया है। इसमें वाराणसी नगर की शोभा का वर्णन किया गया है।

हिंदी अनुवाद- जो समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में स्थित है क्योंकि, वह भारत नाम का देश है, जहाँ की सन्तान भारतीय है ।

5. अपने पठित' खण्डकाव्य के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर दीजिए- 3

(क) (i) 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर कलिंग युद्ध का वर्णन कीजिए।

(ii) 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन कीजिए।

(ख) (i) 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथा का सारांश लिखिए।

(ii) 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के आधार पर 'पृथ्वीराज द्वारा दी गई युद्ध की प्रेरणा' कावर्णन कीजिए।

(ग) (i) 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के आधार पर किसी प्रमुख घटना का उल्लेख कीजिए ।

(ii) 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गांधी का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

(घ) (i) 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर शिशुपाल का चरित्रांकन कीजिए |

(ii) 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के प्रस्थान सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए।

(ङ) (i) 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण की दानशीलता का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

(ii) 'कर्ण' खण्डकाव्य के सप्तम सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

(च) (i) 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के किसी स्त्री पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

(ii) 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर 'राम- भरत' मिलन की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

(छ) (i) 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

(ii) 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के आधार पर चन्द्रशेखर आजाद का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

(ज) (i) 'तुमुल' खण्डकाव्य के सप्तम सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

(ii) 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर लक्ष्मण का चरित्रांकन कीजिए |

(झ) (i) 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के प्रथम सर्ग का सारांश लिखिए।.

(ii) 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर उसके नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक का चरित्रांकन

उत्तर- 'ज्योति जवाहर' काव्य के नायक हमारे राष्ट्रनायक पं० जवाहरलाल नेहरू हैं। वे स्वयं राष्ट्रीय एकता के प्रतीक . धीरोदात्त नायक के सभी गुणों से युक्त हैं। पं0 जवाहरलाल नेहरू के चरित्र में निम्नलिखितं विशेषताएँ पायी जाती हैं

युगावतार - कवि ने पं० जवाहरलाल नेहरू को युगावतार का रूप दिया है। उनके व्यक्तित्व में समस्त भारतीय महापुरुषों तथा सांस्कृतिक विशेषताओं का समन्वय पाया जाता है। उनमें गाँधी जी का सत्य, अहिंसा और प्रेम, चाणक्य की नीति चन्द्रगुप्त की वीरता विद्यमान है।

महान वीर - हमारे राष्ट्रनायक में वीरता का महान गुण है। उनमें अपार उत्साह है। बड़ी से बड़ी कठिनाई में भी वे घबराते नहीं बाधाओं और आपत्तियों का साहस के साथ सामना करते हुए आगे बढ़ते जाना ही उनकी सफलता का रहस्य है।

भावात्मक एकता—पं० जवाहरलाल नेहरू में राष्ट्रीय भावात्मक एकता सुदृढ़ रूप में मौजूद है। भारत की सब भाषाएँ, सब धर्म, सब महापुरुष, सभी महत्त्वपूर्ण स्थान उन्हें प्रिय हैं। सब धर्म उनके लिए समान हैं।

त्याग भावना - नेहरू जी का जीवन त्याग और बलिदान से पूर्ण है। उन्होंने अपना तन-मन-धन सब कुछ देश के लिए अर्पित कर दिया। जो देश का गया अथवा जिसने सारे देश को ही अपना समझ लिया, उसके व्यक्तिगत वैभव अथवा ऐश्वर्य का प्रश्न ही नहीं उठता।

अन्य विशेषताएँ - उपर्युक्त के अतिरिक्त नेहरू जी में अनेक दिव्य गुण पाये जाते हैं। उन्हें मानवता से प्रेम है। करुणा, आत्मविश्वास, स्वाभिमान, सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि सभी गुण महात्मा गाँधी ने धरोहर के रूप में उन्हें सौंपे हैं।

6. (क) निम्नलिखित लेखको में से किसी एक का जीवन परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो रचनाओं का नाम लिखिए। 3 + 2 = 5

(i) आ० रामचंद्र शुक्ल
(ii) जयशंकर प्रसाद
(iii) डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ख) निम्नलिखित कवियों में से किसी एक का जीवन परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो रचनाओं का नाम लिखिए। 3 + 2 = 5

(i) तुलसीदास
(ii) महादेवी वर्मा
(iii) सूरदास

आ० रामचंद्र शुक्ल

- **जन्म-** 1884 ई0
- **जन्म स्थान-** बस्ती जिले के अगोना ग्राम में।
- **पिता -** चन्द्रबली शुक्ल
- **शिक्षा-** एफ. ए. (इण्टरमीडिएट)
- **आजीविका-** अध्यापन, लेखन
- **भाषा-** शुद्ध साहित्यिक, सरल एवं व्यावहारिक
- **शैली-** वर्णनात्मक, विवेचात्मक, व्याख्यात्मक, आलोचनात्मक, भावात्मक तथा हास्य-व्यंगात्मक।
- **मृत्यु-** 1941 ई0
- **कृतियाँ-** चिन्तामणि, रसमीमांसा, त्रिवेणी, हिन्दी ` साहित्य का इतिहास,

जीवन-परिचय- प्रसिद्ध आलोचक, निबंधकार एवं साहित्यकार इतिहासकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी का जन्म सन् 1884 ई0 में बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था। पिता का नाम चंद्रबली शुक्ल था। आचार्य रामचंन्द्र शुक्ल जी ने हाई स्कूल की परीक्षा मिशन स्कूल मिर्जापुर से उत्तीर्ण की तथा इंटरमीडिएट की परीक्षा अंतिम वर्ष में ही छूट गई थी।

शुक्ल जी ने मिर्जापुर के न्यायालय में नौकरी कर ली किन्तु किसी कारण से छोड़ दी। बाद में मिर्जापुर के मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक हो गए। स्वाध्याय से इन्होंने हिंदी अंग्रेजी सस्कृत बंगला आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। पत्र-पत्रिकाओं में लिखना आरंभ कर दिया। बाद में इनकी नियुक्ति काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक पद पर हो गई। बाबू श्यामसुंदर दास के पश्चात आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी हिन्दी विभाग के अध्यक्ष बने। इसी पर पर कार्य करते हुए सन 1941 ई0 में हिंदी साहित्य का यह आलोचक पंचतत्व में लीन हो गया।

कृतित्व- आचार्य रामचंद्र शुक्ल मूर्धन्य आलोचक, श्रेष्ठ निबंधकार, निष्पक्ष इतिहासकार महान शैलीकार एवं युग प्रवर्तन आचार्य थे। इन्होने अनेक आलोचनाएँ लिखी इनकी विद्वता के कारण ही 'हिन्दी शब्द सागर' के संपादन कार्य में सहयोग के लिए इन्हें बुलाया गया। आलोचना इनका मुख्य एवं प्रिय विषय था। हिन्दी साहित्य का इतिहास लिख कर इतिहास लेखन की परम्परा का सूत्रपात किया।

- **निबंध संग्रह-** चिंतामणि भाग 1 और 2, विचारवीथी
- **इतिहास ग्रंथ-** हिंदी साहित्य का इतिहास
- **आलोचना ग्रंथ-** सूरदास, रस मीमांसा, त्रिवेणी संपादन कार्य जायसी, ग्रन्थावली, तुलसी ग्रंथावली, भ्रमरगीत सार, हिन्दी शब्द सागर, काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका, आनंद कादंबिनी।

तुलसीदास

- **जन्म-** संवत् 1554 वि0 (सन् 1532 ई0)
- **जन्म स्थान-** राजापुर गाँव (चित्रकूट)
- **पिता -** आत्माराम दुबे
- **माता-** हुलसी
- **बचपन का नाम-** रामबोला
- **भाषा-** अवधी तथा ब्रज
- **शैली-** छप्पय, दोहा, चौपाई, कवित, सवैया, आदि।
- **मृत्यु-** संवत् 1680 वि0 (सन् 1623 ई0)
- **प्रमुख कृतियाँ-** रामचरितमानस, जानकी, मंगल, दोहावली, गीतावली, पार्वती मंगल, रामलला-नहछू, रामाज्ञा प्रश्न आदि।

जीवन-परिचय-

तुलसीदास जी के जन्म व स्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। मूल गोसाईं चरित एवं तुलसी-चरित में इनका जन्मस्थान राजापुर बताया गया है। अन्य कुछ विद्वान 'सोरों' नामक स्थान पर जन्में बताते हैं। आचार्य शुक्ल के अनुसार भी इनका जन्म राजापुर में ही माना जाता है। जन्म संवत् 1554 वि0 (सन् 1532 ई0) में बताया जाता है, और यही सर्वाधिक प्रचलित है।

पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। जन्म के सम्बन्ध में एक दोहा प्रचलित है-

"पन्द्रह सौ चौवन विसे, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धर्यो शरीर।।"

बचपन का नाम 'रामबोला' था। जन्मे तो दाँत भी थे और मुँह से राम निकला था। राक्षस समझकर इनकेे पिता ने त्याग दिया तो एक दासी ने इनको पाला तथा बाबा नरहरिदास ने अपना शिष्य बनाया। इनका विवाह रत्नावली से हुआ था परन्तु उससे विरक्त हो गए। काशी में शेष सनातन से वेद-वेदांगों की शिक्षा ली। फिर राम के चरित्र का गायन करने लगे और रामचरित मानस की रचना की। इनका समय काशी, अयोध्या और चित्रकूट में बीता। मृत्यु के सम्बन्ध में भी एक दोहा प्रसिद्ध है-

"संवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला तीज सनि, तुलसी तज्यो शरीर।।"

प्रमुख कृतियाँ- तुलसी दास जी की 12 प्रामाणिक रचनाएँ मानी जाती है-

1. पार्वती मंगल, 2. जानकी मंगल, 3.वैराग्य संदीपनी,4- बरवै रामायण
5. रामाज्ञा प्रश्न
6. कवितावली
7. कृष्ण गीतावली
8. गीतावली
9. रामचरित मानस
10. दोहावली
11. विनय पत्रिका
12. रामलला नहछू

7. अपनी पाठ्यपुस्तक से कंठस्थ किया हुआ कोई एक श्लोक लिखिए जो इस प्रश्न पत्र में न आया हो। 2

मंङ्गल मरणं यत्र विभूतिर्यत्र भूषणम्।
कौपीनं यत्र कौशेयं काशी केनोपमायते ।।

8- विद्यालय में खेल-कूद की सामग्री की ओर ध्यान दिलाते हुए प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना पत्र लिखिए। 4

परीक्षा भवन
प्रयागराज
दिनांक - 12 जनवरी, 2024
सेवा में,
प्रधानाचार्य,
राजकीय विद्यालय,
विष्णुनगर, सीतापुर।

विषयः खेल-कूद की सामग्री के लिए आवेदन

महोदय,

सविनय निवेदन है कि इस वर्ष हमारे विद्यालय ने क्षेत्रीय खेल प्रतियोगिताओं में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है।

आगामी खेल प्रतियोगिताओं के लिए टीमों का चुनाव करने से पूर्व यह आवश्यक हो जाता है कि अपने विद्यालय के खेल के मैदान की समुचित सफाई, कैसे नीचे गड्ढ़ों की भराई, माप के अनुसार मैदान की निशानदेही और यथास्थान पोल गड़वाने की समुचित व्यवस्था की जाए। इन सबके अतिरिक्त खेल की आवश्यक सामग्री- गेंद बल्ले, हॉकी स्टिक, फुटबॉल, वॉलीबॉल, जाली (नेट) आदि का यथोचित प्रबंध करना भी आवश्यक है।

आशा है ऊपर दिए गए विवरण के अनुसार आवश्यक प्रबंध करने और सामग्री जुटाने की दिशा में आप शीघ्र ही यथोचित कदम उठाने की कृपा करेंगे।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
क ख ग

10. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर। निबंध लिखिए। 7

(i) विज्ञान एक वरदान या अभिशाप?

(ii) अनुशासन का महत्त्व

(iii) सत्संगति

(iv) वृक्षारोपण का महत्त्व।

(i) विज्ञान – वरदान या अभिशाप

रूपरेखा –

- प्रस्तावना
- विज्ञान क्या है?
- विज्ञान के बढ़ते कदम
- विज्ञान से हानियां
- उपसंहार

प्रस्तावना– वर्तमान युग विज्ञान का युग है। आदि काल से लेकर वर्तमान तक मनुष्य ने जितनी भी प्रगति की है वह सब विज्ञान की ही देन है। हम सब भली भांति जानते हैं कि– "आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।"जैसे-जैसे मनुष्य की आवश्यकताएं बढ़ती जा रही है, वह नए-नए आविष्कार करता जा रहा है और आगे भी करता जाएगा। प्राचीन काल में असंभव समझे जाने वाले तथ्यों, कार्यों को विज्ञान ने आज संभव कर दिखाया है। छोटी-सी सुई से लेकर हवाई जहाज तक सभी विज्ञान की ही देन हैं। आगे चलकर कई ऐसे आविष्कार भी होने हैं हो सकता है जिनके बारे में हम सभी ने अभी तक विचार भी न किया हो। विज्ञान ने वास्तव में, हमें बहुत कुछ दिया है, जिसके हम सदा ऋणी रहेंगे। विज्ञान से मानव को असीमित शक्ति प्राप्त हुई है। आज मनुष्य विज्ञान की सहायता से पक्षियों की भांति आसमान में उड़ सकता है। गहरे से गहरे पानी में सांस ले सकता है। पर्वतों को लांघ सकता हैं तथा कई मीलों की दूरियों को चंद घंटो में पार कर सकता है।

विज्ञान क्या है? – विज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है - वि + ज्ञान। वि का अर्थ है विशेष और ज्ञान का अर्थ है जानना। इस प्रकार किसी विशेष को जानना ह विज्ञान हैं। दूसरे शब्दो में कहे तो विशिष्ट प्रकार का ज्ञान ही विज्ञान हैं। विज्ञान ने आज हमारे जीवन को बदल कर रख दिया है, मनुष्य जीवन को बहुत ही सुविधाजनक बना दिया है। अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि विज्ञान किसी वरदान से कम नहीं।

विज्ञान के बढ़ते कदम– विज्ञान की वजह से मनुष्य का जीवन बहुत आरामदायक हो गया है। इसमें हमारे समय की भी बचत की है।

(i) गृह कार्यों में– विज्ञान की सहायता से हमारा घरेलू जीवन भी सुखमय हो गया है। आज घरों में हीटर, रेफ्रिजरेटर, टेलीविजन, रेडियो, टेप रिकॉर्डर टेलीफोन, स्कूटर आदि वस्तुएं आ गई है। गृहणियों के अनेक कार्य आज विज्ञान की सहायता से मिनटों में हो जाते हैं। यातायात के क्षेत्र में दो पहिए की गाड़ी से शुरू हुआ सफर अंतरिक्ष तक पहुंच गया है। हमने कई महीनों के सफर को मिनटों में तय कर लिया है। विज्ञान के आविष्कार का प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे सामने है बुलेट ट्रेन। हवाई जहाज के माध्यम से हम मीलों का सफर मिनटों में तय कर लेते हैं। आज विज्ञान ने जल, थल, आकाश तीनों की दूरियों को माप लिया है। जल में बड़े-बड़े जहाज, थल पर बुलेट ट्रेन और हवा में हवाई जहाज, हेलीकॉप्टर ने मीलों की दूरियों को समेट दिया है।

(ii) संचार के क्षेत्र में– संचार के क्षेत्र में विज्ञान ने तेजी से प्रगति की है। 1G से शुरू हुआ यह सफर 5G तक पहुंच चुका है। इंटरनेट प्रकाश की गति से पंख लगाकर उड़ने को तत्पर है। इंटरनेट की स्पीड आज इतनी है जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की थी। वीडियो कॉल, वर्चुअल कॉल विज्ञान की वजह से संभव हुआ है।

(iii) शिक्षा के क्षेत्र में– शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान ने कई आविष्कार किए हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोट के आ जाने से स्कूलों में पढ़ाने के तरीकों में बदलाव आया है। विजुअल तकनीक के माध्यम से आज कठिन विषयों को भी आसानी से पढ़ाया जा रहा हैं।

(iv) मनोरंजन के क्षेत्र में मनोरंजन करना इंसान की स्वाभाविक प्रकृति होती है। मनोरंजन के क्षेत्र में विज्ञान ने अपना बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विज्ञान की तरक्की के साथ मनोरंजन के साधनों में भी प्रगति हुई है। चलचित्र, वीडियो, दूरदर्शन, खेल आदि सभी मनोरंजन के आधुनिक और वैज्ञानिक साधन हैं।

(v) चिकित्सा के क्षेत्र में - चिकित्सा के क्षेत्र में तो विज्ञान ने आश्चर्यजनक चमत्कार किए हैं। आज दुर्लभ से दुर्लभ बीमारी का इलाज भी विज्ञान ने ढूंढ निकाला है, आज चिकित्सा बहुत आसान हो गई है। एक्स-रे मशीन की सहायता से शरीर के अंदर के भागों का रहस्य जाना जा सकता है। शरीर के किसी भी भाग का ऑपरेशन किया जाना संभव है। लेजर के आविष्कार से बिना चीरफाड़ के ऑपरेशन किए जा रहे हैं। अंग प्रत्यारोपण की सुविधा आज विज्ञान की वजह से संभव हो पाई है। रक्तदान, प्लास्टिक सर्जरी जैसे दुर्लभ कार्य आज विज्ञान की वजह से संभव है। स्मार्टफोन पर बैठे ही अपना इलाज करवा कर, दवाइयों की होम डिलीवरी भी करवा सकते हैं। इसने समय और पैसे दोनों की बचत की है। विद्युत - विज्ञान ने मनुष्य को भाप, खनिज, तेल, कोयला, व बिजली को असीमित शक्ति के रूप में प्रदान किया है। बिजली के आविष्कारों ने चारों तरफ चकाचौंध कर दिया है। बिजली एक तरफ तो हमें शक्ति देती है तो दूसरी तरफ रौशनी देकर रात को दिन की तरह बना देती है। आज के समय में बिजली ने मनुष्य का बहुत कल्याण किया है।

(vi) कंप्यूटर के क्षेत्र में - आज हर कोई कंप्यूटर चलाना और उस पर काम करना जानता है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा जो कंप्यूटर से अछूता हो। विज्ञान का सबसे बड़ा आविष्कार तो स्मार्टफोन है जो आज हर आम आदमी की पहुंच में है। जिसकी वजह से घर बैठे आप शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, जो चाहे सीख सकते हैं, घर बैठे बिजनेस शुरू कर सकते हैं या दुनिया भर की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, यह ऐसा अद्भुत चमत्कार है जिसने असंभव को भी संभव बना दिया है। कंप्यूटर में भी दिन प्रतिदिन कई तकनीकों के आ जाने से हमारा काम और भी तेजी से कम समय में सुविधा पूर्वक हो जाता है।

(vii) अंतरिक्ष के क्षेत्र में– अब अंतरिक्ष कोई अनजान विषय नहीं रहा। धीरे-धीरे विज्ञान की मदद से अंतरिक्ष के रहस्यों से पर्दा उठ रहा है। विज्ञान के माध्यम से आज अंतरिक्ष के सारे रहस्यों को वैज्ञानिक सुलझा रहे हैं। भारत का मंगलयान, चंद्रयान जैसे मिशन अंतरिक्ष की तरफ बढ़ते इंसानों के कदमों की पदचाप है। सुरक्षा के क्षेत्र में आज ड्रोन, सीसीटीवी कैमरे, पासवर्ड, वर्चुअल ताले आ जाने से सुरक्षा के क्षेत्र में कई सारे बदलाव हुए हैं।

(viii) कृषि के क्षेत्र में - नवीन वैज्ञानिक आविष्कार ने कृषि उत्पादन में वृद्धि की है साथ ही साथ कार्यों को आसान बना दिया है। ट्रैक्टर और नवीनतम आधुनिक उपकरणों के आ जाने से खेती और भी सरल और सहज हो गई है।

विज्ञान से हानियां– विज्ञान ने यदि हमारे जीवन को सर्व सुलभ बनाया है तो वहीं कई सारी समस्याएं भी उत्पन्न की है-

(i) दुर्लभ बीमारियां – आजकल इतनी दुर्लभ तरीके की बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं जिनका पहले कभी नामोनिशान नहीं था। कोरोनावायरस इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है, पहले इस तरह का कोई वायरस नहीं था। खेतों में हानिकारक रसायनिक पदार्थों के छिड़काव से उत्पादन तो बढ़ रहा है लेकिन फसल में वह पोषक तत्व और वह शुद्धता नहीं रही और इस वजह से कई बीमारियां उत्पन्न हो रही है।

(ii) ग्लोबल वार्मिंग – वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से, बढ़ते औद्योगिकीकरण से, वातावरण में बहुत ही तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। ग्लेशियर पिघल रहे हैं, ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है। जल स्त्रोतों की कमी हो रही है और तो और वृक्षों की कमी से प्राणवायु ऑक्सीजन में भी कमी आ रही है। पर्यावरण प्रदूषण के बढ़ते स्तर के कारण अनेक प्रकार की बीमारियां उत्पन्न हुई है।

तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता– तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता के कारण भी कई संकट उत्पन्न हुआ है। यदि आज के समय में इंटरनेट बंद हो जाए तो कई करोड़ों लोग बेरोजगार हो जाएंगे क्योंकि हमने खुद को विज्ञान पर इतना अधिक निर्भर कर लिया है कि अब इसके बिना हमारी अर्थव्यवस्था नहीं चल सकती। विज्ञान ने जहां एक ओर कई सुविधाएं दी हैं तो कई समस्याएं भी पैदा की हैं। तकनीक ने जहां कई कार्यों को आसान बनाया है, वही हमें आलसी भी बना दिया है। आज हर छोटे से छोटे काम के लिए हम तकनीक पर निर्भर हो गए हैं। चाहे घर में खाना बनाना हो, कपड़े धोना हो या मनोरंजन, हर चीज के लिए हमें तकनीक की आवश्यकता होती है।

मोबाइल एडिक्शन– कोरोना काल में हम सभी घर पर बंद हो गए थे और इस वजह से छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक का स्क्रीन टाइम काफी बढ़ गया था। इस वजह से बच्चे मोबाइल स्क्रीन के आदी हो चुके हैं। जिस वजह से बचपन से ही आंखों पर चश्मा लग गया है और मोबाइल एडिक्शन के कारण चिड़चिड़ापन, अत्यधिक क्रोध आना, भूख ना लगना ध्यान केंद्रित ना हो पाना जैसी कई समस्याएं पैदा हुए हैं। इन सब की वजह से आज मनुष्य खुद की बनाई तकनीकों की वजह से परेशान हो रहा है।

उपसंहार– इस प्रकार हम देखते हैं कि जिस प्रकार हर सिक्के के 2 पहलू होते हैं उसी प्रकार विज्ञान के भी दो पहलू हैं- एक सकारात्मक पक्ष जिससे हमने बहुत कुछ अर्जित किया है तो वही नकारात्मक पक्ष जहां हमने बहुत कुछ खोया है। अंग्रेजी में कहावत है कि – "Science is a good servant but a bad master" अर्थात् विज्ञान एक अच्छा नौकर तो है किंतु एक बुरा मालिक है।_यदि हमने विज्ञान का सही तरीके से इस्तेमाल किया तो यह हमारे भविष्य में भी लाभदायक होगा। किंतु यदि हमने तकनीक को खुद के ऊपर हावी होने दिया तो वह दिन दूर नहीं जब हम इसके पूरी तरह गुलाम बन जाएंगे।

यूपी बोर्ड मॉडल पेपर 2024

व्याख्यात्मक हल(10TH)

Exam 22 February 2024

Best of Luck
For
Board Exam

Gyansindhu Coaching Classes